एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मक्का एवं सोयाबीन में जैविक पौध-संरक्षण उपाय

(*पूजा शर्मा एवं भवानी सिंह मीना)
कीट विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: poojasharma0377@gmail.com

वर्तमान में की जा रही खेती के नकारात्मक पहलुओं, कृषि आदानों की बढ़ती कीमतों एवं खेती में लागत बढ़ने के मद्देनजर जैविक खेती ही एकमात्र टिकाऊ खेती का विकल्प है। फसलों में सबसे अधिक व्यय पौध–संरक्षण रसायनों पर होता है। इन रसायनों का दीर्घकालीन उपयोग मनुष्यों, पशुओं एवं भूमि के लिए बहुत हानिकारक होता है। अतः जैविक विधि से पौध–संरक्षण उपाय अपनाकर भूमि की उर्वराशक्ति, जैव विविधता आदि को बनाये रखते हुए दीर्घकाल तक पर्यावरण एवं वायु को प्रदुषित किये बिना टिकाऊ उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

मक्का

प्रमुख कीट – तना छेदक, मोयला, फड़का व सैन्य

प्रमुख बीमारियाँ – पत्ती धब्बा, तुलसिता व जड़ गलन।

इनसे बचने के लिए निम्न उपाय अपनाएं –

- अंकुरण के 3, 10 एवं 30–35 दिन पश्चात् नीम बीज अर्क (5 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- ट्राइकोग्रामा अण्ड परजीवी 1.5 लाख प्रति हैक्टर की दर से फसल की 7, 14 एवं 50 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।
- बी.टी. फॉर्मुलेशन का फसल की 10 एवं 60 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।
- मिट्टी चढ़ाने के समय पुरानी मृत व बीमारी ग्रसित पत्तियों को हटा दें।
- अगले वर्ष बुवाई के समय से पूर्व खेत में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के साथ नीम की खली 2 क्विंटल प्रति हैक्टर
- डालें एवं ट्राइकोडर्मा 6 ग्रम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करे।

सोयाबीन

प्रमुख कीट – फड़का, तना व पत्ती छेदक, गर्डल बीटल, हरी अर्ध कुण्डलक (सेमी लूपर) तम्बाकू इल्ली।

प्रमुख बीमारियाँ – विषाणु रोग (हरा व पीला मौजेक) जीवाणु रोग, तना सड़न रोग, पत्ती धब्बा रोग, प्लाजमा जनित रोग।

इनसे बचने के लिए निम्न उपाय अपनाएं –

- पक्षी आश्रय के लिए ष्ज्ष् आकार की 40 से 50 खपच्चियाँ प्रति हैक्टर की दर से लगाना चाहिये।
- 15 दिन की फसल अवस्था पर नीम आधारित एजाडिरेक्टिन 1500 पी.पी.एम. का 5-0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।
- 30 दिन की फसल अवस्था पर अण्ड परजीवी ट्राइकोग्रामा के अण्डों को 1 लाख/हैक्टर की दर से फसल पर छोड़ना चाहिये।

- 30 से 45 दिन की फसल अवस्था तक गर्डलबीटल से ग्रसित पौधे के भागों (डण्ठलों) को सप्ताह में दो बार के हिसाब से तोड़कर नष्ट करना चाहिये।
- 50 दिन की फसल अवस्था पर सूक्ष्मजीवों कीटनाशक बैसीलस थूरिन्जेन्सिस (बी.टी.) का 1 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।